ॐ कॉलरा ॐ

हर वर्ष वर्षाऋतु में कई प्रकार के संसर्गजन्य रोगों का प्रादुर्भाव होता है। सरकारी स्वास्थ विभाग नें इस वर्ष मलेरिया और डेंगु के रूग्णों की कमी का दावा किया है, किन्तु गॅस्ट्रो और कॉलेरा के रूग्णों में बडी संख्या में वृद्धि हुई है। कॉलेरा की बीमारी दूषित जल द्वारा फैलती है। हम सभी की यह नैतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारी होती है कि, हम सभी दूषित जल से फैलने वाले रोगों के प्रति स्वयं सजग रहे एवं अपने साथ साथ अन्य सभी को भी इस बारे में सतर्क करना आवश्यक है।

- संसर्गजन्य जीवाणू रोग
- दूषित जल द्वारा प्रसार
- तकलीफ देह शौच (पतली) और शारीरिक शुष्कता
- उपचार में आसान
- उपचार न होनेकी स्थिती में कुछ ही घंटो में मृत्यू की संभावना
- शरीर में शुष्कता होने से मृत्यू हो सकती है जो अति सामान्य उपचार से टाली जा सकती है वह है क्षार संजीवनी

कॉलेरा क्या है?

ग्राम निगेटीव्ह बॅक्टेरीअम विब्रीओ कॉलेरी इस जीवाणू के माध्यम से अत्यधिक पतला शौच होता है। कॉलेरा से पीडीत रूग्ण गंभीर स्वरूप के पानी जैसे दस्त होते है, जिससे शरीर में जल का प्रमाण कम होने लगता है तथापि समय पर उपचार न हुआ तो वह कुछ ही घंटो में मृत्यू के घेरे में आ सकता है।

कॉलेरा किस कारण होता है?

विब्रीओ कॉलेरी इस जीवाणू का जल में प्रादुर्भाव होने से कॉलेरा रोग फैलता है। इस जिवाणू का जीवन मात्र दो घंटे से पांच दिन तक ही होता है।

विब्रीओ कॉलेरी

१. ५६ डिग्री तापमान में वह ३० मिनट में नष्ट होता है।
२. डबलते पानी में कुछ ही सेकंड में नष्ट होता है।
३. क्रेसॉल या ब्लिचींग पावडर जैसे जंतूनाशकों से यह तुरन्त नष्ट होता है। (6mg/1)
४. pH५ या इससे भी कम आम्ल के संपर्क से यह तुरन्त नष्ट होता है।
५. बर्फ में ४ से ६ हफ्ते तक या उससे अधिक समय तक जीवित रह सकता है।

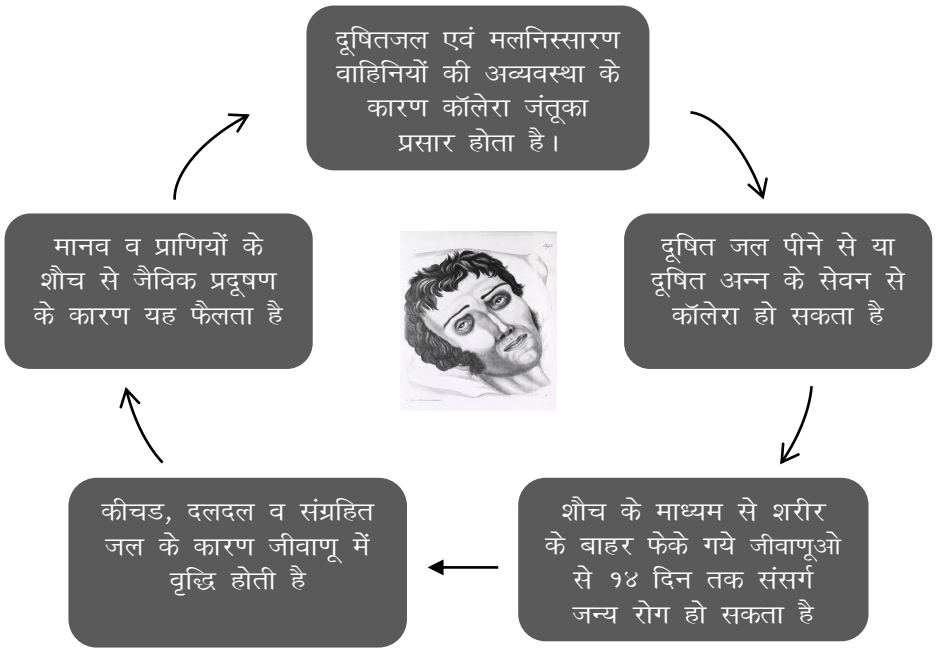

कॉलेरा के लक्षण क्या होते है?

सर्वसाधारण रूप से विब्रीओ कॉलेराग्रस्त ७५% व्यक्तियों मे ७ से १४ दिनों तक यह जीवाणू उनके शौच में पाया जाता है फिर भी इस रोगी के काई लक्षण स्पष्ट दिखाई नही देते यही कारण है कि उनका वातावरण में पुनः प्रवेश सहजता से होने लगता है, तथापि अन्यों में भी यह सहजता से फैलता है, इसके लक्षण इस प्रकार है –

१. पानी समान दस्त होना (कॉलेरा से होने वाले दस्त पतले, हलके दुधिया पानी रंग के, चांवल धोये पानी जैसे होते है।
२. जी मचलना एवं उलटी
३. पेट में दर्द
४. सिर दर्द
५. शरीर में शुष्कता (कॉलेरा से होनेवाली शरीर शुष्कता से चिडचिड, आलस, ऑखे अंदर जाना, मुह सुख्ना, ज्यादा प्यास लगना, त्वचा सुखना, पेशाब न होना या कम मात्र में होना, रक्तचाप कम होना, हृदय की धडकनें अनियमित होना)

कॉलेरा की उपचार पद्धती

कॉलेरा पर सरल उपचार किया जा सकता है। योग्य उपचार होने पर मृत्यू दर १% से भी कम की जा सकती है।

१. **पुनरूज्जीवीत करना :** सर्वप्रथम उपचार के दौरान शरीर में जल की कमी को पूर्तता करना परिस्थितिवश सलाईन के माध्यम से भी यह पूर्तता की जा सकती है। साधारणतः २०% में क्षार संजिवनी का उपयोग करने से अत्यधिक लाभ होता है।
२. **जीवनरक्षक :** शारीरिक शुष्कता के चलते होनेवाले गंभीर परिणामों को देखते हुए जीवनरक्षक दवाओं का उपयोग करना आवश्यक हो जाता है, तथापि उल्टियॉं कम होते ही इसका उपयोग प्रारंभ होना चाहिये। साधारणतः टेट्रासायक्लिन, डॉक्सीसायक्लीन या सिप्रोफ्लॉक्सासीन इन दवाओं का उपयोग किया जाता है। जिसके कारण शौच का प्रमाण भी कम होता है एवं चिकित्सालय में भर्ती रहने की कालावधि में कमी आती है। जीवाणू का उत्सर्जन कम होता है व पतले पदार्थो के सेवन में कमी आती है। जीवनरक्षकों का अधिक उपयोग प्रास्तावित नहीं होता क्यों कि इससे कॉलेरा के प्रसार पर कोई परिणाम नहीं होता केवल सूक्ष्म जीवाणुओं का प्रतिरोध बढता है।

   इसके अतिरिक्त अन्य किसी भी ॲन्टीस्पास्मोडीक, ॲन्टीडायरीअल दवाओं की आवश्यकता नहीं होती, ४८ घंटो के पश्चात पुनः अधिक शौच सुरू होने पर प्रभावी जीवनरक्षकों का उपयोग अनिवार्य हो जाता है।

कॉलेरा कैसे बचें ?

- ✓ उबला हुआ पानी पीये या क्लोरीन, आयोडीनयुक्त जंतूनाशकों का उपयोग करें।
- ✓ चाय या कॉफी जैसे उबले पेय पीये तथा सीलबंद बोटल बिना बर्फ के पेय उपयोग में लाये।
- ✓ पकी सब्जीयॉं खायें, कच्ची सब्जी कतई उपयोग में न लाए।
- ✓ केवल पूर्ण पके हुए गरम अन्न पदार्थ सेवन करें। छिलकेवाले फल ही खायें।
- ✓ अर्ध पका एवं मछली, मांस या समुद्री पदार्थों का सेवन न करें।
- ✓ सडक किनारें उपलब्ध अन्न पदार्थ या पेय का सवेन न करें।
- ✓ साबुन व पानी से हाथ बार–बार धोंये।
- ✓ साबुन या पानी उपलब्ध ना हो तो अल्कोहोल युक्त हॅन्डक्लीनर का उपयोग करें। (६०% से कम अल्कोहोल)
- ✓ भोजन करने के पूर्व या भोजन बनानें के पूर्व या शौचालय का उपयोग करने के पश्चात हाथ धोकर स्वच्छ रखना चाहिये।

संदर्भ : http://www.maha-arogya.gov.in
http://www.who-int/cholera/
www.cdc.gov

संकलन – कु. किन्नरी देसाई
औषध माहिती केंद्र प्रमुख,
महाराष्ट्र राज्य औषध व्यवसाय परिषद

हिंदी अनुवाद : हरीशचंद्र गणेशानी
कार्यकारी सदस्य–एमएसपीसी, मुंबई, कॅम्प नागपुर (Mob. 9822574108)